एकल विषय में द्विवर्षीय प्रमाण–पत्र कार्यक्रम

संस्कृत

CSSST-01

अभिज्ञानशाकुन्तलम्
नीतिशतकम्

अभिज्ञानशाकुन्तलम् – (सामान्य अध्ययन के लिए सम्पूर्ण, संस्कृत व्याख्या तथा हिन्दी अनुवाद के लिए चतुर्थ अंक पर्यन्त)

महाकवि कालिदास, (जीवनवृत्त, स्थिति –काल, कृतियाँ), अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कथानक, मूलकथा–स्रोत, नामकरण, नाटकत्व) नाट्क की महत्ता, तथा अभिज्ञानशाकुन्तल का वैशिष्टय, कालिदास की नाट्यकला, अलंकार योजना, रसयोजना, सौन्दर्य –प्रेम चित्रण, प्रकृति–चित्रण आदि तथा अन्य आलोचनात्मक प्रश्न। प्रमुख पात्रों का चरित्र –चित्रण, प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ अंक की संस्कृत–हिन्दी व्याख्या अनुवाद एवं सूक्तियों की व्याख्या।

नीतिशतकम् – (श्लोक–1 से श्लोक 30 तक)

भर्तृहरि का जीवन–वृत्त और कृतियाँ। श्लोकों पर विशेष टिप्पणियाँ। 1 से 30 तक श्लोकों की हिन्दी व्याख्या, अनुवाद एवं सामान्य प्रश्न।

CSSST-02

उत्तररामचरितम्
छन्द– अलंकार

उत्तररामचरितम्– (तृतीय अंक पर्यन्त)

- **नाटक–** नाटक –उपयोगिता एवं स्वरूप, रमणीयता, उत्पत्ति तथा विशेषताएँ। नाटक के मूल तत्त्व, नायक के प्रकार एवं लक्षण, प्रतिनायक, नायिका। रस तथा भाव। प्रेक्षागृह आदि।
- **भवभूति–** जीवन परिचय, समय, भवभूति का पाण्डित्य, रचनाएँ, भवभूति का काव्य सौन्दर्य, भवभूति और कालिदास तथा अन्य आलोचनात्मक प्रश्न।
- प्रथम अंक, द्वितीय अंक तथा तृतीय अंक की व्याख्या तीनों अंकों के श्लोकों का अनुवाद तथा सुभाषित वाक्य, पात्रों का चरित्र–चित्रण, कथा–वस्तु, कथा का आधार, मूलकथा में परिवर्तन, उत्तररामचरितम् में वर्णित समाज एवं संस्कृति, रस–निरूपण तथा सूक्तियों की व्याख्या आदि।

छन्दोऽलंकार–(साहित्यदर्पण के आधार पर)

- छन्दों का सामान्य परिचय, गण– विचार, यति, वर्णिक छन्द, मात्रिक छन्द, प्रमुख छन्दों के लक्षण एवं उदाहरण– अनुष्टुप या श्लोक, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, द्रुतविलम्बित, वंशस्थ, वसन्ततिलका, मालिनी, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीडित, स्नग्धरा, वियोगिनी, पुष्पिताग्रा, आर्या।
- अलंकारों का सामान्य परिचय– अलंकार की व्युत्पति, साहित्यदर्पण के अनुसार अलंकार की परिभाषा, अलंकारों का वर्गीकरण तथा भेद, आचार्य विश्वनाथ का परिचय समय, रचनाएँ, साहित्यदर्पण का प्रतिपाद्य विषय, काव्यशास्त्र के सम्प्रदाय।
- प्रमुख अलंकारों के लक्षण एवं उदाहरण और उनमें भेद –अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, सन्देह, भ्रान्तिमान, व्यतिरेक, प्रतिवस्तूपमा, दृष्टान्त, अर्थान्तरन्यास, तुल्योगिता, दीपक, विभावना, विशेषोक्ति, विरोध या विरोधाभास, परिसंख्या, निदर्शना प्रमुख अलंकारों में भेद।

संशोधित पाठ्यक्रम

CSSST-03

कादम्बरी कथामुखम्
कारक प्रकरण
संस्कृत निबन्ध
लघुसिद्धान्तकौमुदी – संज्ञा प्रकरण तथा सन्धि प्रकरण

- **कादम्बरी कथामुखम् –(अगस्त्याश्रम वर्णन पर्यन्त)**

  संस्कृत गद्य– साहित्य का उद्भव और विकास, तथा सामान्य परिचय, महाकवि बाणभट्ट : जीवन वृत्त, स्थितिकाल एवं कृतित्व। कादम्बरी : कथानक एवं पात्र– परिचय (चरित्र–चित्रण), कादम्बरी– समीक्षा, कथा का मूल स्रोत, कथा–आख्यायिका में भेद, बाण का साहित्यिक वैभव–शैली एवं भाषा, गद्य सौष्ठव, बाणभट्ट विषयक सूक्तियाँ।

  कादम्बरी– कथामुखम् (अगस्त्याश्रमवर्णन पर्यन्त)– अनुवाद।

- **कारक प्रकरण –(सिद्धान्त कौमुदी)**
  कारक का सामान्य परिचय, प्रथमा विभक्ति से सप्तमी विभक्ति तक सम्पूर्ण कारक प्रकरण। सभी सूत्रों की व्याख्या तथा उदाहरण।
- **संस्कृत निबन्ध**

वर्णनात्मक निबन्ध– गंगा, वाराणसी, संस्कृतभाषायाः महत्त्वम् वैशिष्ट्यच, नौका– विहारः, सैनिक शिक्षा, समाचारपत्रम्, पुस्तकालयः, दीपावली, वसन्तः, ग्रीष्मः, स्वतंत्रतादिवसोत्सवः, गणतंत्रविशेषोत्सवः।

विचारात्मक निबन्ध– भगवान श्रीकृष्णः, भगवान बुद्धः, महामना मदनमोहन मानवीयः, महात्मा गान्धिः।

भावात्मक व समीक्षात्मक निबन्ध, –महाकविःकालिदासः, सत्संगतिः , सदाचारः, परोपकारः।

शास्त्रीय कवि, सूक्ति एवं सुभाषितगत निबन्ध – अनुशासनम्, विद्यार्थिकर्त्तव्यम्, आधुनिक विज्ञानम्, विद्या, सत्यम, (सत्यमेव जयते नानृतम्), उद्योगः, अहिंसा, गुणैर्हि सर्वत्र पदं निधीयते, मातृभक्तिः देशभक्तिश्च, वैदिकी संस्कृतिः, भारतीय– संस्कृतिः, ऋग्वेदः, वेदागानाम् महत्त्वम् ,महाकविः दण्डी, महाकविः बाणभट्टः, महाकवि अश्वघोषः, महाकविः भारविः, अस्माकम् देशः।

- **लघुसिद्धान्तकौमुदी – संज्ञा प्रकरण तथा सन्धि प्रकरण**

संज्ञा प्रकरण– इत्संज्ञा, लोपसंज्ञा, प्रत्याहार, ह्रस्वदीर्घप्लुतसंज्ञा, उदात्तानुदात्तस्वरितसंज्ञा, अनुनासिकसंज्ञा, सवर्णसंज्ञा, संहितासंज्ञा, संयोगसंज्ञा, पदसंज्ञा।

यण्–अयादिचतुष्टय–गुण–वृद्धिसन्धि प्रकरण– यण्सन्धि, अयादिचतुष्टयसन्धि, गुणसन्धि, वृद्धिसन्धि।

पररूप–सवर्णदीर्घ सन्धि प्रकरण – पररूप, सवर्णसन्धि, दीर्घसन्धि।

पूर्वरूप–प्रकृतिभाव–ह्स्वसन्धि प्रकरण –__पूर्वरूप संधि, प्रकृतिभाव, ह्रस्वविधान।

श्चुत्व–ष्टुत्व–शश्छोऽट– अनुस्वारादि– हल्सन्धिप्रकरण।

कुक्–टुक्–घुट्–तुक्– ङ.मुट्– रूविधान– हल्सन्धिप्रकरण ।

विसर्गसन्धि प्रकरण– सत्वविधान, रुत्वविधान, यत्वविधान, रत्वविधान, र–लोपविधान अण् दीर्घविधान, सुलोप विधान।

स्त्रीप्रत्ययप्रकरण– टाप्, ङीप्, ऊङ् , ङ्ीन, ति प्रत्यय विधान।

CSSST-04

वैदिकमन्त्रचयनम्
कठोपनिषद्

वैदिकमन्त्रचयनम्

- **वेदों का सामान्य परिचय–** चार वेद, चार ऋत्विक् , वेदत्रयी, वेदों के विभागः संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्। संहिता ग्रन्थ – ऋग्वेद संहिता, यजुर्वेद संहिता, सामवेद संहिता, अथर्ववेद संहिता। ब्राह्मणग्रन्थ– ऋग्वेद, शुक्लयजुर्वेद, कृष्णयजुर्वेद, सामवेदीय, ब्राह्मण, अथर्ववेदीय ब्राह्मण ग्रन्थ। आरण्यक ग्रन्थ ऋग्वेद के, सामवेद के तथा अथर्ववेद के आरण्यक। उपनिषदों का सामान्य परिचय।
- **वेदाङ्ग**

  वेदाङ.ग – शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष। प्रातिशाख्य– ऋग्वेदप्रातिशाख्य, तैत्तिरीयप्रतिशाख्य, शुक्लयजुर्वेद प्रातिशाख्य, शौनकीय चतुरध्यायिका, अथर्वप्रातिशाख्य, ऋक्तन्त्र।

- **देवता–परिचय**

  अग्नि, इन्द्र, विश्वेदेवा, विष्णु, वाक्, पुरुष, शिवसंकल्प सूक्तों में –स्थान, उत्पत्ति , स्वरूप, कार्य, प्राकृतिक आधार, निवास स्थान एवं महत्त्व ।

- **वैदिक भाषा की विशेषताएँ** वैदिक भाषा की विशेषताएँ, ध्वन्यात्मक विशेषताएँ, सन्धिगत विशेषताएँ, स्वराघात, धातुरूप, शब्दरूप, वाक्यविन्यास, वैदिक स्वरप्रक्रियाएँ। ऋग्वेद के छन्द (गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, जगती, पंक्ति, छन्दों के विषय में विशेष)।
- **वैदिक सूक्तों के मन्त्रों –** का पदपाठ, सायणभाष्य, अन्वय, पदार्थ, अनुवाद तथा व्याकरणात्मक टिप्पणियाँ। अग्निसूक्त, विश्वेदेवाःसूक्त, विष्णुसूक्त, इन्द्रसूक्त, पुरुषसूक्त, वाक्सूक्त, शिवसंकल्प सूक्त।
- **कठोपनिषद् (प्रथम अध्याय) –(प्रथम अध्याय– तृतीय वल्ली पर्यन्त)**

  वैदिक वाङ्.मय में कठोपनिषद्, कठोपनिषद् का सामान्य परिचय एवं स्थान, कठोपनिषद् का प्रतिपाद्य, सारांश, कठोपनिषद् का सामान्य अध्ययन, श्लोकों की व्याख्या , हिन्दी अर्थ, भावार्थ, शाब्दिक निर्वचन, पारिभाषिक शब्दार्थ एवं समीक्षात्मक प्रश्न।

CSSST-08

काव्य एवं काव्य शास्त्र

साहित्यदर्पण

किरातार्जुनीयम्

साहित्य –दर्पण (तृतीय परिच्छेद पर्यन्त)

- **प्रथम परिच्छेद–** मंगलाचरण – (आवश्यकता– भेद) प्रयोजन, उपादेयता, काव्यलक्षण, मम्मट का काव्यलक्षण तथा खण्डन।
- **प्रथम परिच्छेद–** वक्रोक्ति जीवितकार, मम्मट, भोजदेव तथा ध्वन्यालोककार के मत की आलोचना एवं खण्डन, काव्य का प्रमुख फल रसास्वाद– इसका उपपादन, पद्य के नीरस अंशो में भी काव्यत्व का उपपादन, वामन के मत की आलोचना, आनन्दवर्धन की आलोचना, साहित्यदर्पणकार का काव्यलक्षण, काव्यदोष तथा इनके कार्य, गुण, अलंकार तथा रीति और इनके कार्य।
- **द्वितीय परिच्छेद–** वाक्य का लक्षण, आकाङ्क्षा, योग्यता तथा आसक्ति के (स्वरूप–लक्षण), महावाक्य का लक्षण (स्वरूप), पद का लक्षण, अर्थ के तीन भेद और उनके स्वरूप, अभिधा शक्ति का स्वरूप एवं संकेतग्रह के साधन, किस–किस अर्थ में संकेतग्रह, लक्षणा शक्ति का स्वरूप, 'कर्मणिकुशलः' आदि प्रयोगों में रूढ़ि लक्षणा का खण्डन।
- **द्वितीय परिच्छेद –** लक्षणा का भेद– उपादान लक्षणा का स्वरूप, लक्षणा के भेद लक्षण– लक्षणा का स्वरूप, आरोपा तथा अध्यवसाना इन भेदों के कारण लक्षणा के 8 भेद, शुद्धा एवं गौणी के भेद से लक्षणा के 16 भेद, 'गौर्वाहीकः' के शाब्दबोध–सम्बन्धी विभिन्न मत और उनका खण्डन तथा साहित्यदर्पणकार का मत।
- **द्वितीय परिच्छेद –** व्यंग्य के गूढ़ और अगूढ़ होने का कारण प्रयोजनवती लक्षणा के 16 भेद, व्यंग्य–प्रयोजन के धर्मिगत तथा धर्मगत भेदों के कारण 32 भेद , लक्षणा के 40 भेद पुनः 80 भेद, व्यंजना का स्वरूप लक्षण, शाब्दी व्यंजना के भेद, अभिधामूला तथा लक्षणामूला व्यंजना का स्वरूप तथा उदाहरण।
- **द्वितीय परिच्छेद–** आर्थी व्यंजना का लक्षण, उदाहरण, भेद, शब्द एवं अर्थ दोनों की ही व्यंजकता–व्यंजना विवेचन, शब्द के तीन भेद, मीमांसकाभिमत तात्पर्या वृत्ति का स्वरूप।
- **तृतीय परिच्छेद–**रस का सामान्य एवं विशेष स्वरूप एवं आस्वादन – प्रकार, करुणादि के भी रसत्व का उपपादन, दुख की कारणभूत सामग्री से सुखरूप रसोत्पति कैसे? रसानुभूति क्यों, अश्रुपातादि क्यों, रामादि के रत्यादि के उद्‌बोध के कारणों से सामाजिक की रत्यादि का उद्‌बोध कैसे, साधारणीकरण व्यापार का स्वरूप, सामान्य सामाजिक में उत्साहादिबोध कैसे, विभावादि की भी साधारण्य से ही प्रतीति, विभवादि भी अलौकिक।
- **तृतीय परिच्छेद–** रसबोध में विभावादि, विभावादि में एक रस कैसे, 'रस अनुकार्यगत हैं' तथा– 'रस अनुकर्तृगत है– खंडन, रसज्ञाप्य नहीं, रस कार्य नहीं रस नित्य नहीं रस भविष्यत कालीन नहीं, रस वर्तमान नहीं, रस निर्विकल्पक– सविकल्पक ज्ञान का विषय नहीं, रस परोक्ष या अपरोक्ष नहीं, रस का वास्तविक स्वरूप – अलौकिक, चवर्णा ही रससत्ता में प्रमाण, रस की अवाच्यता आदि का उपपादन, इत्यादि की रसरूपता का उपादन।

किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग)

- आलोचनात्मक अध्ययन से सम्बन्धित – अलंकृत शैली के प्रवर्तक – कवि भारवि, भारवि का स्थितिकाल, जीवन–परिचय, काव्यभेद तथा महाकाव्य का स्वरूप, महाकाव्य का नामकरण, महाकाव्य का नायक, संक्षिप्त इतिवृत्त, महाभारत की कथा से प्राप्त परिवर्तन, भारवि की प्रशस्ति, शैली का

वैशिष्टय, भारवि का अर्थ–गौरव, भारवि का अलंकार निरूपण, छन्द रसाभिव्यंजना, प्रथम सर्ग की कथा, प्रथम सर्ग की सूक्तियाँ।

- प्रथम सर्ग के सभी श्लोकों (1–46) की व्याख्या तथा अनुवाद।